Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

श्रीमती यशोदा देवी की कहानियों का वैशिष्ट्य

डॉ. रुचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, शिवाजी कालेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
ms.ruchira.gupta@gmail.com

सारांश

लैंगिक एवं वर्ग गत पूर्वाग्रहों से युक्त पुरुषवादी सोच को चुनौती देने के लिए जब नारी अपने अनुभवों, समस्याओं को पन्नों पर उतारती है तब उसकी सत्यता पर अविश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि वे उसके जीवन का अंश होते हैं। परिवेश, परिवार, समाज व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। यही कारण है कि स्त्री पुरूष की मानसिकता में भी अंतर मिलता है। स्मृति ग्रंथों, पुराणों व ऋग्वैदिक संस्कृति में नारी को 'आनन्द की पवित्र अनुभूति' स्वीकार किया गया है। समयानुसार नारी के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर आया। प्रस्तुत शोधालेख में बंगमहिला की समकालीन श्रीमती यशोदा देवी की कहानियों के माध्यम से तत्कालीन समाज को समझने का प्रयास और उनके अवदान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द: *लैंगिक , पूर्वाग्रहों, स्मृति ग्रंथों, पुराणों , ऋग्वैदिक संस्कृति , आख्यायिका*

शोधालेख:

अनादि काल से साहित्याध्ययन व सृजन में स्त्री -पुरुष की प्रेरणादायी और उसके विचारों की पृष्ठभूमि में अवस्थित रही है। पुरुष साहित्यकारों की प्रायः सभी कृतियों में नारी किसी न किसी रूप में उल्लिखित मिलती है किंतु उन्होंने जिस रूप में उसे अंकित किया वहीं अंतिम सत्य नहीं कहा जा सकता। अतः अपने प्राप्य को लेने के लिए , अपनी समस्याओं से समाज को अवगत कराने के लिए स्त्री को अपना स्वर बुलंद करना पड़ा। बंगमहिला की समकालीन इलाहाबाद कन्या पाठशाला की मुख्याध्यापिका एवं 'स्त्री धर्म शिक्षक' मासिक पत्रिका की संपादिका श्रीमती यशोदा देवी थीं। इन्होंने स्त्रियों और बच्चों पर अनेक रचनाएं लिखीं यथा आदर्श बालिका, नारी नीति शिक्षा, सच्चा पति प्रेम , आदर्श हिंदू बालिका , महिला हस्त भूषण , अबला हितोपदेश , पत्नी पत्र दर्पण , गृहस्थ जीवन , सुबोध बालिका , सच्ची माता, शिशु रक्षा विधान , नई बहू , बड़ी बहन , सुघढ़ कन्या , सदाचारिणी, चित्तौड़ की चिंता, भारत का नारी इतिहास इत्यादि । इनकी अधिकांश कहानियां 'स्त्री धर्म्म शिक्षक' पत्रिका में स्वतंत्र अथवा धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई। इनमें से कुछ में सामाजिक , ऐतिहासिक चरित्रों को केंद्र में रखकर आदेशात्मक अभिव्यक्ति द्वारा उपदेशात्मक कथानकों की योजना की गई है। पुस्तकाकार कथाओं से इतर लेखिका ने अनेक ऐतिहासिक -पौराणिक कथाओं-

पृथ्वीराज की रानी , धर्म्म और साहस, सती का प्रश्न, वीरमती, भानुमति, स्त्री की दया, वीरा वृत्तांत , सोना रानी का सच्चा पति प्रेम , मुक्ता , विमला, वीर पुत्री , हरिश्चंद्र तारामती आदि तथा कतिपय सामाजिक आख्यायिकाओं- सुशीला, चतुर नारी, पातिव्रत, धर्म्म महिमा , सत्यवती, भानुमति आदि का सृजन किया। ये सभी 'स्त्रीधर्म्म शिक्षक ' के संवत् 1966 से 1970 तक के अंको में स्वतंत्र अथवा धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए। इनकी ऐतिहासिक पौराणिक कहानियां विश्रुत नारियों के चरित्रों से संबद्ध हैं । नारियों की वीरता , पतिभक्ति, सतीत्व, सदाचार का वर्णन इनमें प्रमुख रहा है । इनकी कहानियां नारी प्रधान हैं तथा कहानियों के शीर्षक उनके चारित्रिक गुणों पर आधारित हैं जैसे भानुमति, कलावती, सुशीला, धर्म और साहस इत्यादि। इनकी कहानियों के नायक अपेक्षाकृत दुर्बल हैं और नायिकाओं की पीड़ा के लिए किसी सीमा तक उत्तरदायी भी हैं किन्तु अंत तक आते- आते वे अपने कुकृत्यों के लिए ग्लानि युक्त होकर नायिकाओं के चरमोत्कर्ष में सहायक बनते हैं यह लेखिका के उद्देश्यों के अनुरूप हैं। इस दृष्टि से उनकी कलावती , चतुर नारी , सच्चा पति प्रेम कहानियां दृष्टव्य हैं। इनकी नयिकाएं अपने उत्कृष्ट चरित्र द्वारा समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करती हैं। 'नई बहू' कहानी की नायिका उन नववधुओं से नितांत भिन्न है जिनके प्राण ही वस्त्राभूषणों में बसते हैं। वह अपने पति से कहती है " नहीं स्वामी , स्त्री के शरीर की शोभा गहनों से नहीं है , स्त्री की सारी शोभा और सारे सुख पति के सुखी रहने में हैं। वे स्त्रियां महा मूर्खा हैं जो गहनो में ही अपने शरीर की शोभा समझती हैं। वे अवश्य नर्कवासिनी होंगी जो पति के दुःख में दुखी ना हो कर अपना सुख नाना प्रकार के सुखों में ही समझती हैं "।(1)

यशोदा देवी ऐतिहासिक कहानियों का वर्णन करने वाली प्रथम महिला थीं। इनसे प्रेरणा लेकर कालांतर में अन्य लेखिकाओं ने भी ऐतिहासिक विषयों को अपनाया। इनकी ऐतिहासिक कहानियों यथा 'वीर पत्नी' में ऐतिहासिक तथ्यता के प्रति अत्यधिक आग्रह के कारण कथाक्रम स्थान-स्थान पर बाधित हुआ है। कथानक अबाध त्वरा से चरम सीमा की ओर नहीं बढ़ पाता। कथा की चारुता के लिए चरम सीमा अप्रत्याशित होनी चाहिए परंतु इनकी कहानियों में आरंभ में ही उद्देश्य कथन के कारण अंत लगभग पूर्व निश्चित बन जाता है। कुछ कहानियों के कथान्त में सौष्ठव का पूर्ण तः अभाव मिलता है जैसे 'पृथ्वीराज की रानी' कहानी में अकबर के कुत्सित वचनों को सुनकर पृथ्वीराज की रानी अपने शौर्य एवं पति परायणता का परिचय देते हुए दृढ़ शब्दों में उसकी भर्त्सना करती है किंतु इस प्रसंग का अंत किस प्रकार होता है इससे पाठक अनभिज्ञ रहता है। इसी प्रकार 'पतिव्रत धर्म्म महिमा' कहानी की नायिका ब्राह्मण याचक के क्रोधित होने पर पति भक्ति के महत्व को बताती है और यहीं कथान्त हो जाता है। इन दोनों ही कहानियों में लेखिका पूर्वाग्रस्त है तथा कहानी को मध्य में ही छोड़ने में संकोच नहीं करतीं। इस तरह कहानी में अन्य तत्वों का भी कलात्मक निर्वाह नहीं हो पाता तथापि इस क्षेत्र की प्रथम महिला कहानीकार होने के कारण इन कहानियों के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। 'सच्चा पति प्रेम' संग्रह में संकलित कहानियों (सोन रानी का सच्चा पति प्रेम, , कलावती का सच्चा पति प्रेम आदि) में पितृसत्तात्मक मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया

है । लेखिका ने अतीत के आदर्शों को वर्तमान में पुनः प्रतिष्ठित करने की चेष्टा की है । सामयिक समाज में महिलाओं की अशिक्षा , उनमें वीरता और पति निष्ठा के अभाव की यशोदा देवी प्रत्यक्षदर्शी थीं और उनकी दशा को सुधारने के लिए प्रयत्नशील भी थीं। 'सती भूषण ' रचना की भूमिका में उन्होंने लिखा है -" प्रायः देखा जाता है कि स्त्रियों के पढ़ने और मनन करने योग्य पुस्तकों की संख्या बहुत कम है और उपन्यास तथा किस्सा कहानियों की संख्या अधिक है जिससे व्यर्थ ही उनके पढ़ने में समय नष्ट होता है। इस बात की बड़ी भारी आवश्यकता है कि स्त्रियों को धर्म शास्त्र का ज्ञान कराने वाली पुस्तकें पढ़ाई और सुनाई जायें।" (2) इसी प्रकार 'सच्चा पति प्रेम' संग्रह की भूमिका में दिया उनका वक्तव्य उनकी विचारधारा को पुष्ट करता है। " हमारी पढ़ी-लिखी बहिनें भी अपने यथार्थ कर्तव्यों को भूलती जाती हैं ।इस विषय में यदि विशेष विचार किया जाए तो प्राचीन वीर विदूषी और पतिव्रताओं के चरित्रों की बड़ी भारी आवश्यकता है । यदि समयानुसार अच्छे और सच्चे चरित्र सब बहिनों को पढ़ने और सुनने को मिलें तो उनका प्रभाव पढ़ी और अनपढ़ सब पर ही अच्छा और सच्चा हो सकता है ।"(3) ' सुशीला' कहानी में भी उनकी तद्विषयक उक्ति दृष्टव्य है -" प्यारी बहनों! यह पतिव्रताओं के सच्चे पति प्रेम के सच्चे वृत्तांत हैं। ईश्वर हम सब को भी ऐसी ही बुद्धि प्रदान करें कि हम सब भी अपने पति में सच्चा प्रेम कर उपरोक्त स्त्रियों का आदर्श बनें जिससे हमारे देश का गौरव और हमारी जाति का धर्म भाव सदा के लिए अटल रहे।"(4)

यशोदा देवी अपने परिवेश में चतुर्दिक व्याप्त विभिन्न कुरीतियों और उनको भोगते व्यक्तियों की समस्याओं से भलीभांति अवगत थीं। उन्होंने उनका यथार्थ अंकन कर कूपमंडूक की भांति जीते जनमानस का ध्यान उन कुरीतियों की तरफ आकृष्ट किया तथा उनके निराकरण की प्रेरणा दी । 'सच्चा पति प्रेम' कहानी में तद् युगीन समाज में व्याप्त तंत्र- मंत्र , जड़ी-बूटी, जादू -टोना और उनके प्रति लोगों के अंधविश्वास को अंकित किया गया है।' मुक्ता' कहानी में मंत्र- तंत्र आदि में पूर्वजों की आस्था का अंकन है, 'सच्चा पति प्रेम' कहानी में पति वशीकरण की बात कर सामयिक मनोवृत्ति का अंकन है। लेखिका के मतानुसार-" प्यारी बहनों ! कभी किसी की बातों में आकर जंत्र -मंत्र करना बड़ी मूर्खता है। देखो सुशीला ने कैसे-कैसे कष्ट उठाये परंतु पति से सच्चा प्रेम रखने से ही सब प्रकार उसके धर्म की रक्षा हुई ।"(5) 'सुघढ़कन्या' नामक कहानी में लेखिका ने पाक विद्या के प्रति महिलाओं की अरुचि की निंदा की है। उनका कहना है -" आजकल जो प्रायः स्त्रियां इतनी सुकुमार ,आलसिन और अभिमानिन होती जाती

हैं कि तनिक भी पढ़ गई और ईश्वर की कृपा से कुछ धनवती हो गई तो भोजन बनाना उन्हें भार मालूम होने लगता है। उनकी लड़कियां भी वैसी ही हो जाती हैं।" (6) यशोदा देवी ने देशकाल वातावरण के चित्रण में विशेष रूचि ली है। यह उनकी सुधारवादी दृष्टि की ही परिचायक है। अपने समकालीन रचनाकारों की भांति वे केवल उनका सतही उल्लेख करके संतुष्ट नहीं हो जातीं अपितु अपनी रचनाओं द्वारा उन समस्याओं के उन्मूलन का भी प्रयास करती हैं । उनके द्वारा चित्रित वातावरण

भौतिक है। 'कलावती का सच्चा पतिप्रेम ' कहानी में कलावती अलाउद्दीन के विरुद्ध युद्ध में पति का साथ देती है। 'वीरमती' कहानी में लेखिका ने पाटन , सरोवर इत्यादि का उल्लेख किया है। (7) अपनी कहानियों में विभिन्न स्थानों के नामोल्लेख और यथोचित वर्णन के प्रति सजगता दिखाई है यथा 'पति प्रेम की झांकी' कहानी में कथानक का प्रारंभ ऐतिहासिक वातावरण के अंकन से हुआ है । " अहमद नगर से कुछ दूर दक्षिण में एक उजड़ा हुआ बाग अब तक नजर आता है। इतिहास के जानने वाले पाठक इस बात को अवश्य जानते होंगे कि महाराष्ट्राधिपति महाराज शिवाजी को दमन करने के लिए महा पराक्रांत सम्राट औरंगजेब अपना अधिकांश समय अहमद नगर में ही बिताते थे। आज भी अहमद नगर में उनकी विशाल कब्र दिखाई देती है । "(8) 'वीरमति ' कहानी में सुरलिंग सरोवर, पाटन आदि स्थानों का परिचय दिया गया है। यशोदा देवी प्रकृति चित्रण के प्रति विशेष आग्रही नहीं थीं तथापि इस प्रकार के चित्रण से उनकी कहानियों में सौष्ठव की वृद्धि हुई है । 'सुशीला' कहानी का दृश्य इस दृष्टि से अवलोकनीय है -" आश्विन मास में मध्याह्न समय गगन मंडल में शरत्काल के गगन मंडल की नीलिमा के मध्य में शारदीय चन्द्रमा का प्रथम हास्य देखने में बड़ा ही सुंदर प्रतीत होता है ।" (9)

यशोदा देवी ने चरित्रोंद्घाटन के लिए आवश्यकतानुसार वर्णात्मक और नाटकीय शैलियों का अवलंब लिया है। पात्रों के क्रियाकलापों व प्रतिक्रियाओं, हावभाव द्वारा भी उनकी मानसिकता को उभरा है। ' सच्चा प्रति प्रेम ' कहानी में सोन रानी की चारित्रिक विशेषताओं का अंकन वर्णनात्मक शैली में है। " चांपराज हाड़ा की पत्नी सोनरानी बड़ी चतुर और विचारवती तथा सत्य धर्म परायण थी। वह अपने पति को प्राणों से भी अधिक प्रेम रखती थी। वह सदा पति भक्ति में ही लीन रहती थी । उस समय धैर्य , साहस और युक्ति में उसके समान कोई स्त्री ना थी।" (10) 'सती सर्वस्व' कहानी की कथा नायिका जसमा के आंतरिक और बाह्य सौंदर्य का अंकन करते हुए लेखक ने लिखा है -" जसमा मालवा देश की रहने वाली थी । वह गोरे रंग की एक सुकुमार स्त्री थी । उसका सारा अंग मानो सांचे में ढला हुआ था। कमल नेत्र , चंद्रवत बदन , घुंघराले केश और नखशिख से सारा अंग कोमल सौंदर्य युक्त था । उसके शील स्वभाव ने सारे सहवासियों को मोहित कर रखा था। वह सबसे प्रेम और प्रीति के साथ मिलती थी ।" (11) पात्रों के परस्पर संवादों द्वारा भी चरित्र चित्रण में गति लाने का प्रयास किया गया है जैसे ' पातिव्रत धर्म महिमा' की कथा नायिका ,क्रोधित ब्राह्मण याचक से कहती है "... मैं सब जानती हूं मुझसे आप क्रोध ना करें। मैं बगुली नहीं हूं जो आपके क्रोध से भस्म हो जाऊंगी। मुझे अपने पति के सिवाय न इस संसार में कोई देवता है ना तीर्थ है, ना दान व्रत और पुण्य है ।" (12) इस प्रकार लेखिका ने अपनी कथानायिका के पति प्रेम , आत्मविश्वास और निर्भयता को वाणी है। पात्रों के क्रियाकलापों द्वारा भी लेखिका ने उनकी आंतरिक विशेषताओं का उद्घाटन किया है। 'वीर पुत्री' कहानी में अलाउद्दीन की धूर्तता का अंकन करते समय लेखिका ने लिखा है "जब बादशाह को जया के पाने का अन्य कोई उपाय न देख पड़ा तब उसने जया के पिता के साथ अच्छा बर्ताव करना आरंभ कर दिया। उसके साथ जो कारगार में अनुचित बर्ताव किया जाता था उसे बादशाह ने एकदम बन्द कर दिया । " (13) कथान्त में लेखिका ने स्वयं उस समय की परम्परा का निर्वाह करते हुए

नायक/ नायिका के सद्गुणों की प्रशंसा की है यथा "जसमा तू धन्य थी। तेरा पतिव्रत धर्म धन्य था। तेरी मृत्यु नहीं हुई वरन् तू जीवित है, सती। तेरा ऐसा साहस फिर हमारी स्त्रियों में उत्पन्न हो।" (14)

श्रीमती यशोदा देवी की लघु कहानियों में संवाद योजना अत्यल्प है। लेखिका स्वयं ही सारी कहानी सुना जाती हैं किंतु धारावाहिक रूप में प्रकाशित कहानियों में संवाद की वैविध्य पूर्ण योजना मिलती है। 'पातिव्रत धर्म महिमा ' कहानी में ब्राह्मण और कथानायिका के संवादों से नायिका की निर्भरता , पति प्रेम और आत्मविश्वास का पता चलता है । अधिकांश संवाद संक्षिप्त , सजीव , स्वाभाविक और पात्रों की विभिन्न मानसिकता के अनुरूप हैं । उपदेशात्मक अथवा भावावेगपूर्ण स्थलों पर संवादों के साथ ही वक्ता की भाव भंगिमा भी बदलती चलती है जैसे "सुशीला के दोनों नेत्र क्रोध से जल उठे , पांव से दबी नागिन के समान गरज कर ओठों को कंपाती हुई कहने लगी...।" (15) ऐसे स्थलों पर संवाद किंचित लम्बे हैं तो तथा चरित्र उद्घाटन और मंतव्य प्रकाशन के द्विविध उद्देश्यों को एकसाथ सिद्ध करते हैं। जहां कहीं उन्होंने पात्रों के कार्यकलापों के मध्य उनकी गतिविधियों का भभी उल्लेख करना प्रारंभ कर दिया है वहां उनकी संवाद योजना खटकती है। कहीं-कहीं दीर्घ उक्तियों के प्रति लेखकीय आग्रह इतना प्रबल हो उठता है कि उक्तियों व कथागत वर्णनात्मक शैली का अंतर ही मिट जाता है ।

यशोदा जी की भाषा पर बांग्ला भाषा का प्रच्छन्न प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । तद्भव शब्दों की प्रधानता ने भाषा को सहज , सरल , व्यावहारिक रुप दिया है। भाषालंकृति के प्रति आग्रही ना होने पर भी इन्होंने मुहावरों और लोकोक्तियों , शब्द युग्मों का यथा स्थान प्रयोग किया है। भावपूर्ण शैली के कारण कहानियों में आई एकरसता को उन्होंने दूर करने का प्रयास किया है जैसे ' हरिश्चंद्र -तारामती ' कहानी में हरिश्चंद्र भावविह्वल हो उठते हैं -"हा मेरे दासों!! मेरे मंत्रियों !मेरे ब्राह्मणों ! यह मेरा राज्य कहां चला गया। हा प्यारी तारा ! हा पुत्र रोहिताश्व विश्वामित्र के दोष से मुझ मन्दभागी को छोड़कर कहां चले गये।"(16) विराम चिन्हों के प्रयोग में अपेक्षित सतर्कता ना होने से उनकी भाषा कहीं- कहीं त्रुटि पूर्ण हो गई है । इनकी रचनाओं में लिंग, वचन संबंधी दोष भी मिलते हैं जैसे स्त्रियें, आपत्तियें आदि तथा 'मैं तुझ से निर्बल की समान बात कर रही हूं। " (17) अंततः कह सकते हैं कि रचना कौशल की दृष्टि से यद्यपि इनकी कहानियां विशेष प्रभावित ना करती हों किंतु संक्षिप्तता, रोचकता , विविधता के कारण अपना एक विशिष्ट स्थान अवश्य रखती हैं । इनकी कहानियों में व्यक्ति की सामाजिक परिस्थितियों व उनके प्रति व्यक्त प्रतिक्रियाओं का अंकन प्रमुख रहा है । नारी प्रधान कहानियों में नारी जीवन की त्रासदी, करुणा , भावुकता , सहानुभूति , तिरस्कार , विवशता एवं व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। इनकी पौराणिक धरातल पर आधारित कहानियां अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी हैं । इन्होंने अधिकांशतः वर्णनात्मक शैली का अवलंब लिया है किंतु संबोधनओं के प्रयोग और संवादों में नाटकीयता मिलती है । केवल भावाभिव्यक्ति को प्रमुख मानकर लिखी गई इनकी कहानियां प्रभावहीन हैं। इनकी कहानियों में उद्देश्य की अभिव्यक्ति कहीं व्यंजनात्मक है तो अन्यत्र

प्रत्यक्ष कथित है। वास्तविकता का सजीव और सुंदर चित्रण , सामाजिक घरेलू परिस्थितियों का सुचारू और हृदयस्पर्शी अंकन तथा भाषा शैली पर बांग्ला भाषा का प्रच्छन्न प्रभाव इनकी कहानियों का वैशिष्ट्य है।

संदर्भ:

1 हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 35 पर उद्धृत

2. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 37 पर उद्धृत

3. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 37 पर उद्धृत

4. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 37 पर उद्धृत

5. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 35 पर उद्धृत

6. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 35 पर उद्धृत

7. देखिए ,स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका, भाद्रपद 1967,पृष्ठ 145

8. हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966, पृष्ठ 36 पर उद्धृत

9. देखिए, स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका,अगहन 1969, पृष्ठ 213

10. ,हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता,

राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 32 पर उद्धृत

11. देखिए, स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका , माघ 1970, पृष्ठ 335

12. स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका , अगस्त 1909 ,पृष्ठ 22

13. स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका , आषाढ़ 1970 ,पृष्ठ 131

14. स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका , आषाढ़ 1970 ,पृष्ठ 131

15. देखिए ,हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, डॉ.उर्मिला गुप्ता,

राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1966 , पृष्ठ 34 पर उद्धृत

16.स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका ,आश्विन 1970,पृष्ठ 231

17.स्त्री धर्म्म शिक्षक पत्रिका ,पौष 1967,पृष्ठ 263